इस अमूल्य जीवन में पावन जरूर बनना
मनुष्य से देवता बनने का पुरुषार्थ करना
जो ईश्वरीय संतान कहलाते
वो सदा क्षीर-ख़ण्ड हो कर रहते
उलटी -सुल्टी बातें नही करते
लड़ाई- झगड़ा कर लुन-पानी नही होते
देहि-अभिमानी हो कर्मातीत अवस्था को पाते
अपनी जांच करनी बाप को कितना याद किया
खान -पान, चाल- चलन रॉयल रही
उलटी बाते तो नही करी,झूठ तो नही बोलते
अपनी एक रस स्थिति बनायी
विजयी रत्न ही बाप के गले का हार बनते
विजयी होना ही हर्षित रहना
वो एक बाप के आकर्षण से होते आकर्षित
एक के अंत में खो जाना माना एकांतवासी
बनना

ॐ शांति!!!
मेरे बाबा!!!